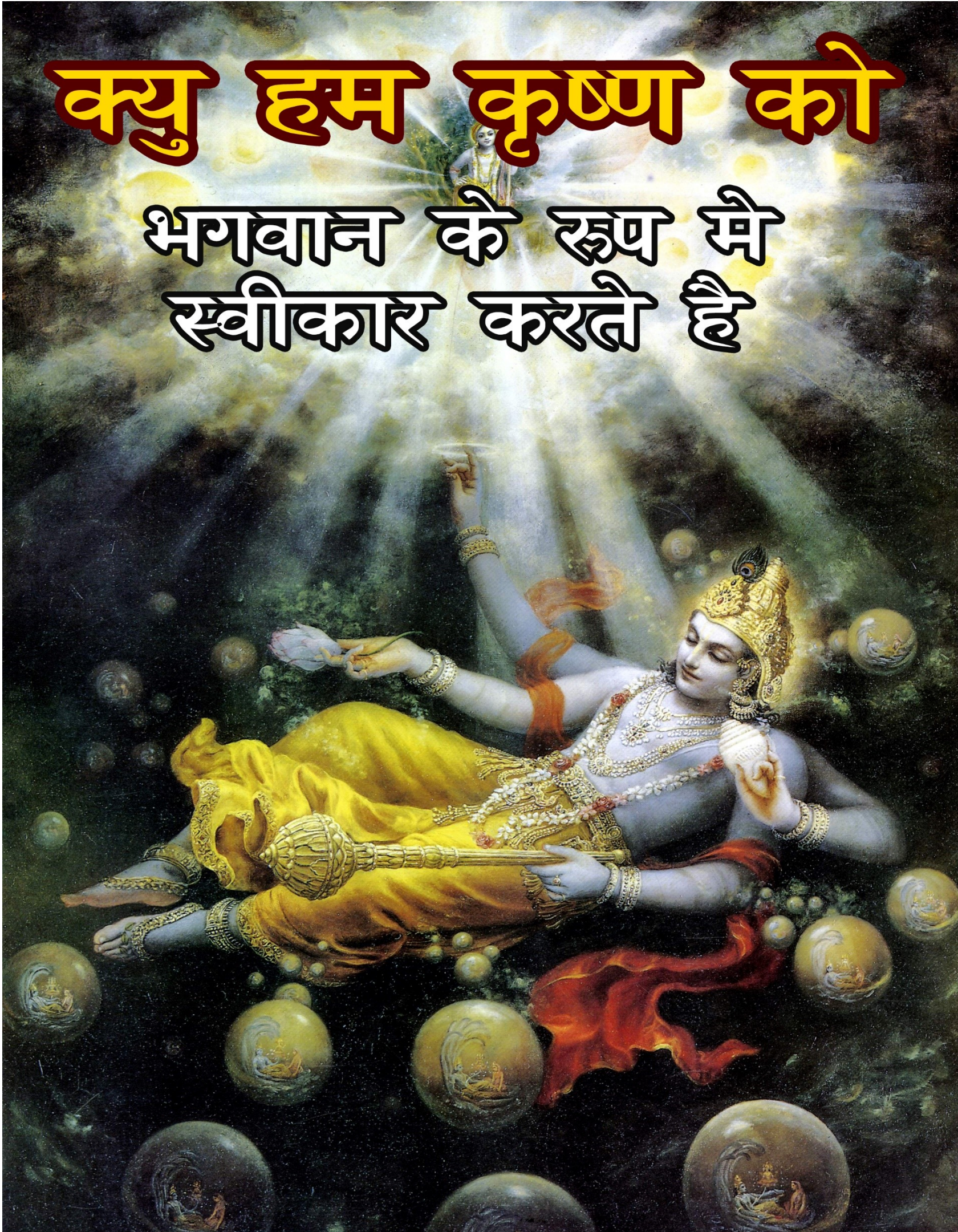


क्यु हम कृष्ण को

भगवान के रूप में स्वीकार करते हैं



Kamlesh C. Patel
EternalReligion.org

The Bhagavad-Gita As It Is and Shrimad Bhagavatam verses are courtesy of BBTI, www.krishna.com

क्यों हम भगवान कृष्ण को भगवान के रूप में स्वीकार करते हैं?

१. वह लाखों बार प्रकट हुए हैं और यह साबित करता है कि वह अनन्त है.
२. उन्होंने स्पष्ट रूप से स्वयं को परमेश्वर घोषित किया है.
३. उन्होंने खुद को सबसे दयालु और प्रेममय साबित किया है.
४. उन्होंने भौतिक रूप से खुद को सच्चा भगवान साबित किया है.
५. उन्होंने ऐसे ऐसे चमत्कार किए हैं जो कभी किसी और ने नहीं किए.
६. उन्होंने इस जीवन में लोगों को बचाया है.



सभी जीवों के शुभचिंतक

१ भगवान कृष्ण लाखों बार प्रकट हुए हैं, यह साबित करते हुए कि वे अनन्त हैं

“हे ब्रह्मा, वह मैं ही हूँ जो सृष्टि के पूर्व विद्यमान था. जब मेरे अतिरिक्त कुछ भी नहीं था. तब इस सृष्टि की कारणस्वरूपा भौतिक प्रकृति भी नहीं थी. जिसे तुम अब देख रहे हो, वह भी मैं ही हूँ और प्रलय के बाद जो शेष रहेगा वह भी मैं ही हूँ.”
(भगवान कृष्ण, श्रीमद्-भागवतम् २.९.३३)

“ऐसा कभी नहीं हुआ कि मैं न रहा होऊँ या तुम न रहे हो अथवा ये समस्त राजा न रहे हों; और न ऐसा है कि भविष्य में हम लोग नहीं रहेंगे.”
(भगवान कृष्ण, भगवद्-गीता २.१२)

“भक्तों का उद्धार करने, दुष्टों का विनाश करने तथा धर्म की फिर से स्थापना करने के लिए मैं हर युग में प्रकट होता हूँ.”
(भगवान कृष्ण, भगवद्-गीता ४.८)

२ भगवान कृष्ण के स्वयं को भगवान घोषित करने वाले कुछ विधान नीचे दिए गए हैं.

अ. भगवान कृष्ण बताते हैं कि उन्होंने संपूर्ण विश्व, लाखों ब्रह्मांडों की रचना की है और उनके पालनकर्ता हैं.

“सम्पूर्ण विराट जगत मेरे अधीन है. यह मेरी इच्छा से बारम्बार स्वतः प्रकट होता रहता है और मेरी ही इच्छा से अन्त में विनष्ट होता है. (भगवान कृष्ण, भगवद्-गीता ९.८)

आ. भगवान कृष्ण कहते हैं कि स्वयं के एक कण के साथ पूरे ब्रह्मांड को बनाए रखते हैं.

“किन्तु हे अर्जुन! इस सारे विशद ज्ञान की आवश्यकता क्या है? मैं तो अपने एक अंश मात्र से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त होकर इसको धारण करता हूँ.” (भगवान कृष्ण, भगवद्-गीता १०.४२)

इ. भगवान कृष्ण कहते हैं कि वे सभी आध्यात्मिक और भौतिक ग्रहों के स्रोत हैं.

“मैं समस्त आध्यात्मिक तथा भौतिक जगत् का कारण हूँ, प्रत्येक वस्तु मुझ ही से उद्भूत है. जो बुद्धिमान यह भलीभाँति जानते हैं, वे मेरी प्रेमाभक्ति में लगते हैं तथा हृदय से पूरी तरह मेरी पूजा में तत्पर होते हैं” (भगवान कृष्ण, भगवद्-गीता १०.८)

ई. भगवान कृष्ण कहते हैं कि वे समस्त सृष्टि के जनक बीज हैं.

“यही नहीं, हे अर्जुन! मैं समस्त सृष्टि का जनक बीज हूँ. ऐसा चर तथा अचर कोई भी प्राणी नहीं है, जो मेरे बिना रह सके.
(भगवान कृष्ण, भगवद्-गीता १०.३९)

भगवान कृष्ण कहते हैं कि वे मौसम को नियंत्रित करते हैं.

“मैं ही ताप प्रदान करता हूँ और वर्षा को रोकता तथा लाता हूँ...” (भगवान कृष्ण, भगवद्-गीता ९.१९)

उ. भगवान कृष्ण कहते हैं कि वह ग्रहों को भ्रमण कक्षा में रखते हैं.

“मैं प्रत्येक लोक में प्रवेश करता हूँ और मेरी शक्ति से सारे लोक अपनी कक्षा में स्थित रहते हैं.” (भगवान कृष्ण, भगवद्-गीता १५.१३)

ऊ. भगवान कृष्ण कहते हैं कि वे सभी जीवों की प्रजातियों के मूल हैं.

“हे कुन्तीपुत्र! तुम यह समझ लो कि समस्त प्रकार की जीव-योनियाँ इस भौतिक प्रकृति में जन्म द्वारा सम्भव हैं और मैं उनका बीज-प्रदाता पिता हूँ.” (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १४.४)

ए. भगवान कृष्ण कहते हैं कि वह सर्वव्यापी है, जिसका अर्थ है कि वह हर जगह मौजूद है.

“तथापि मेरे द्वारा उत्पन्न सारी वस्तुएँ मुझमें स्थित नहीं रहती. जरा, मेरे योग-ऐश्वर्य को देखो! यद्यपि मैं समस्त जीवों का पालक (भर्ता) हूँ और सर्वत्र व्याप्त हूँ, लेकिन मैं इस विराट अभिव्यक्ति का अंश नहीं हूँ, मैं सृष्टि का कारणस्वरूप हूँ (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ९.५)

भगवान कृष्ण कहते हैं कि वह सर्वशक्तिमान है, जिसका अर्थ है कि वह वह सबसे महान है.

“चूँकि मैं क्षर तथा अक्षर दोनों के परे हूँ और चूँकि मैं सर्वश्रेष्ठ हूँ, अतएव मैं इस जगत् में तथा वेदों में परम पुरुष के रूप में विख्यात हूँ.” (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १५.१८)

ऐ. भगवान कृष्ण कहते हैं कि वह सर्वज्ञ है, जिसका अर्थ है कि वह भूत, वर्तमान और भविष्य जानते हैं.

“हे अर्जुन! श्रीभगवान् होने के नाते मैं जो कुछ भूतकाल में घटित हो चुका है, जो वर्तमान में घटित हो रहा है और जो आगे होने वाला है, वह सब कुछ जानता हूँ. मैं समस्त जीवों को भी जानता हूँ, किन्तु मुझे कोई नहीं जानता.” (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ७.२६)

ओ. भगवान कृष्ण कहते हैं कि सूर्य, चंद्रमा और अग्नि की ऊर्जा या वैभव उनसे आता है.

“सूर्य का तेज, जो सारे विश्व के अंधकार को दूर करता है, मुझसे ही निकलता है. चन्द्रमा तथा अग्नि के तेज भी मुझसे उत्पन्न हैं” (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १५.१२)

३ भगवान कृष्ण के कुछ उपदेश नीचे दिए गए हैं जो यह साबित करते हैं कि वह सबसे दयालु, क्षमाशील, प्रेम करने वाले और जिम्मेदार हैं.

अ. भगवान कृष्ण ने यह साबित किया है कि वे सबसे दयालु हैं. उनके नैतिक मूल्य सभी जीवों और करुणा के कार्यों के लिए लाभदायक हैं.

भगवान कृष्ण सभी के शुभचिंतक हैं

“मुझे समस्त यज्ञों तथा तपस्याओं का परम भोक्ता, समस्त लोकों तथा देवताओं का परमेश्वर एवं समस्त जीवों का उपकारी...” (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ५.२९)

भगवान कृष्ण सभी के सबसे प्रिय मित्र हैं

“मैं ही लक्ष्य, पालनकर्ता, स्वामी, साक्षी, धाम, शरणस्थली तथा अत्यन्तप्रिय मित्र हूँ...” (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ९.१८)

भगवान कृष्ण सभी के साथ समान व्यवहार करते हैं.

“मैं न तो किसी से द्वेष करता हूँ, न ही किसी के साथ पक्षपात करता हूँ. मैं सबों के लिए समभाव हूँ...”

(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ९ .२९)

भगवान कृष्ण जानवरों की हत्या की आज्ञा नहीं देते - उनके मन में जानवरों के लिए भी दया है.

“यदि कोई प्रेम तथा भक्ति के साथ मुझे पत्र, पुष्प, फल या जल प्रदान करता है, तो मैं उसे स्वीकार करता हूँ. ”

(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ९ .२६)

भगवान कृष्ण का भक्त केवल वही भोजन कर सकता है जो पहले भगवन को चढ़ाया जाता है (भगवद-गीता ९.२७-२८), और वह केवल शाकाहारी भोजन ग्रहण करता है. इस प्रकार, भक्तों को शुद्ध शाकाहारी होना चाहिए.

भगवान कृष्ण अपने भक्तों को सभी से प्रेम करने की आज्ञा देते हैं.

“जो किसी से द्वेष नहीं करता, लेकिन सभी जीवों का दयालु मित्र है, ऐसा भक्त मुझे अत्यन्त प्रिय है...

(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १२.१३-१४)

"जो शत्रु तथा मित्र के साथ सामान व्यवहार करता है ..."(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १४.२२-२५)

“जब मनुष्य निष्कपट हितैषियों, प्रिय मित्रों, तटस्थों, मध्यस्थों, ईर्ष्यालुओं, शत्रुओं तथा मित्रों, पुण्यात्माओं एवं पापियों को समान भाव से देखता है, तो वह और भी उन्नत माना जाता है.”(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ६.९)

“भगवान् ने कहा – हे भरतपुत्र! निर्भयता, आत्मशुद्धि, आध्यात्मिक ज्ञान का अनुशीलन, दान, आत्म-संयम, यज्ञपरायणता, वेदाध्ययन, तपस्या, सरलता, अहिंसा, सत्यता, क्रोधविहीनता, त्याग, शान्ति, छिद्रान्वेषण में अरुचि, समस्त जीवों पर करुण, लोभविहीनता, भद्रता, लज्जा, संकल्प, तेज, क्षमा, धैर्य, पवित्रता, ईर्ष्या तथा सम्मान की अभिलाषा से मुक्ति – ये सारे दिव्य गुण हैं, जो दैवी प्रकृति से सम्पन्न देवतुल्य पुरुषों में पाये जाते हैं.” (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १६.१-३)

भगवान कृष्ण ने साबित कर दिया कि वह क्षमाशील है, क्योंकि वे सभी को, असीमित अवसर देते हैं न केवल एक.

हर कोई अनंत काल से विद्यमान है और उसे असीमित मौके मिलते हैं.

“ऐसा कभी नहीं हुआ कि मैं न रहा होऊँ या तुम न रहे हो अथवा ये समस्त राजा न रहे हों; और न ऐसा है कि भविष्य में हम लोग नहीं रहेंगे. जिस प्रकार शरीरधारी आत्मा इस (वर्तमान) शरीर में बाल्यावस्था से तरुणावस्था में और फिर वृद्धावस्था में निरन्तर अग्रसर होता रहता है, उसी प्रकार मृत्यु होने पर आत्मा दूसरे शरीर में चला जाता है. धीर व्यक्ति ऐसे परिवर्तन से मोह को प्राप्त नहीं होता. ” (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता २.१२-१३)

भगवान कृष्ण कहते हैं कि हम सभी अनन्त हैं और हमें असीमित अवसर या जीवन मिलते हैं. किसी भी आत्मा के लिए कोई चिरकालिक नरकवास नहीं है.

“यदि तुम्हें समस्त पापियों में भी सर्वाधिक पापी समझा जाये तो भी तुम दिव्यज्ञान रूपी नाव में स्थित होकर दुख-सागर को पार करने में समर्थ होगे.”(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ४.३६)

अ. यहां तक कि सबसे पापी लोग भगवान के राज्य में वापस जा सकते हैं, अगर वे बस इस पल से पाप करना बंद कर देते हैं, भगवान कृष्ण की पूजा करते हैं, और उनके निर्देशों का पालन करते हैं.(भगवद-गीता)

आ. भगवान कृष्ण ने साबित किया कि वह सबसे अधिक जिम्मेदार हैं.

भगवान कृष्ण सभी को अपना परिवार मानते हैं.

“इस बद्ध जगत् में सारे जीव मेरे शाश्वत अंश हैं. बद्ध जीवन के कारण वे छहों इन्द्रियों के घोर संघर्ष कर रहे हैं, जिसमें मन भी सम्मिलित है.” (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १५.७)

भगवान् कृष्ण ने हमें इच्छा स्वातन्त्र दिया है.

“इस प्रकार मैंने तुम्हें गुह्यतर ज्ञान बतला दिया. इस पर पूरी तरह से मनन करो और तब जो चाहे सो करो.” (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १८.६३)

भगवान कृष्ण किसी को भी उनका अनुसरण करने के लिए मजबूर नहीं करते, न ही श्राप देते हैं और न ही किसी को पीड़ा देते हैं. ऐसा इसलिए है, क्योंकि भगवान कृष्ण सबसे ज्यादा जिम्मेदार व्यक्ति हैं.

४. भगवान् कृष्ण के भगवान् होने के कुछ भौतिक प्रमाण.

परम सत्य यह है की भगवान कृष्ण सबसे सुंदर पारलौकिक रूपवाले अत्युत्तम व्यक्ति है. लाखों लोगों ने भगवान कृष्ण को अपनी आंखों से देखा है. आज भी, कुछ शुद्ध भक्त देख रहे हैं और कुछ उन्हें हर दिन महसूस करते हैं.

“कृष्णस्तु भगवान स्वयम्” - कृष्णा तो आदि पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान है.” (श्रीमद-भागवतम् १.३.२८)

“सच्चिदानंद विग्रहः” - भगवान कृष्ण का शरीर नित्य, चिन्मय और परम आनंदमय आध्यात्मिक विग्रह स्वरूप है. (ब्रह्म संहिता ५.१)

भगवान कृष्ण सभी अवतार के मूल स्रोत हैं और उनका आध्यात्मिक रूप है.

“अतएव, हे अर्जुन! तुम्हें सदैव कृष्ण रूप में मेरा चिन्तन करना चाहिए...” (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ८.७)

भगवान कृष्ण ने स्वयं को 'रूप' के रूप में घोषित किया. जो निराकार है, उस पर कोई ध्यान नहीं लगा सकता.

“जब अर्जुन ने कृष्ण को उनके आदि रूप में देखा तो कहा - हे जनार्दन! आपके इस अतीव सुन्दर मानवी रूप को देखकर मैं अब स्थिरचित हूँ और मैंने अपनी प्राकृत अवस्था प्राप्त कर ली है.”

(भगवान कृष्ण के दर्शन करने पर अर्जुन, भगवद-गीता ११.५१)

अर्जुन ने भगवान कृष्ण को उनके मूल रूप में देखा, जो बहुत सुंदर है.

“हे अर्जुन! केवल अनन्य भक्ति द्वारा मुझे उस रूप में समझा जा सकता है, जिस रूप में मैं तुम्हारे समक्ष खड़ा हूँ और इसी प्रकार मेरा साक्षात् दर्शन भी किया जा सकता है. केवल इसी विधि से तुम मेरे ज्ञान के रहस्य को पा सकते हो.”

(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ११.५४)

भगवान् कृष्ण के प्रत्यक्ष दर्शन उनके सच्चे भक्त करते हैं.

“जब मैं मनुष्य रूप में अवतरित होता हूँ, तो मूर्ख मेरा उपहास करते हैं. वे मुझ परमेश्वर के दिव्य स्वभाव को नहीं जानते.”

(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ९.११)

जब भगवान कृष्ण अपने मूल मानव रूप में पृथ्वी पर दिखाई देते हैं, जो कि शाश्वत और आध्यात्मिक है, भौतिक नहीं। मूर्ख व्यक्ति उन्हें एक सामान्य व्यक्ति मानते हैं और उनकी उपेक्षा करते हैं। वे स्वयं की तुलना ईश्वर से करते हैं, और क्योंकि उनकी सोच भौतिक शरीर के कारण सिमित हैं, वे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि ईश्वर का कोई रूप नहीं हो सकता, क्योंकि वे महान हैं। वे यह महसूस करने में विफल रहते हैं कि ईश्वर का एक शाश्वत आध्यात्मिक रूप है, न कि हमारे जैसा एक अस्थायी भौतिक रूप। इस कारण से वह महान है और हम नहीं हैं।

“अर्जुन ने कहा- आप परम भगवान्, परमधाम, परमपवित्र, परमसत्य हैं। आप नित्य, दिव्य, आदि पुरुष, अजन्मा तथा महानतम हैं। नारद, असित, देवल तथा व्यास जैसे ऋषि आपके इस सत्य की पुष्टि करते हैं और अब आप स्वयं भी मुझसे प्रकट कह रहे हैं।”(भगवद-गीता १०.१२-१३)

नारद, असिता, देवला और अन्य कई महान संतों ने भगवान कृष्ण को एकमेव सच्चे भगवान के रूप में स्वीकार किया है।

५. भगवान कृष्ण ने चमत्कार किया जो किसी और ने कभी नहीं किया।

भगवान कृष्ण ने कई मृत लोगों और जानवरों को वापस लाया है



एक बार कुछ चरवाहे लड़कों, गायों, और बछड़ों को गर्मी ने प्रताड़ित किया, तो उन्हें बहुत प्यास लगी। उन्होंने यमुना नदी का जहरीला पानी पी लिया। वे यमुना के तट पर मृत अवस्था में गिर गए। कृष्ण आए और उन सभी को अपनी एक झलक से वापस जीवित किया। सभी सचेतन हो गए, पानी के किनारे से उठे और एक दूसरे को बड़े आश्चर्य से देखने लगे। उन्हें पता चला कि यमुना का जहरीला पानी पीने से वे मर गए थे और कृष्ण ने उनकी कृपा दृष्टि से उन्हें जीवित कर दिया। (श्रीमद-भागवतम २. ७ .२८)



ईश्वर आध्यात्मिक रूप में प्रकट होते हैं.

हम स्त्री के गर्भ से जन्म लेते हैं और नग्न होते हैं. कृष्ण स्त्री के गर्भ से नहीं जन्मे. वह एक महिला के बगल में अवतरित हुए, पूरी तरह से कपड़े पहने हुए और एक युवा पुरुष के रूप में. फिर उन्होंने खुद को एक बच्चे में रूपांतरित कर लिया.
(श्रीमद-भागवतम १०.३.९ १०, ४६)

कृष्ण इस अर्थ में अजन्मे हैं कि उनका शरीर कभी भी भौतिक परिवर्तनों से नहीं गुजरता. वह अपने पारमार्थिक रूपों और गतिविधियों को प्रकट और प्रदर्शित करता है.

कृष्ण ५००० साल पहले प्रकट हुए और अपने निवास स्थान पर वापस जाने से पहले १२५ वर्षों तक अपने पारलौकिक लीलाओं का प्रदर्शन किया. उनके पास एक आध्यात्मिक शरीर था, जो सबसे सुंदर था. उन्हें कभी कोई झुर्रियां नहीं पड़ीं, न ही दाढ़ी, न ही सफेद बाल, न ही कोई बीमारी. ये भगवान के शरीर के लक्षण हैं.(भगवद-गीता ४.६)

कृष्ण अपने भक्तों के साथ व्यक्तिगत संबंध के रस का आनंद लेने के लिए भौतिक जगत में अवतरित होते हैं. जैसे कोई भी प्यार करने वाला पिता अपने बच्चों के साथ देखना, रहना और खेलना चाहेगा.

दया और प्रेम का देवता

- कृष्ण अपने अनुयायियों को सभी जीवित प्राणियों के साथ सस्नेह रहेना का आदेश देते हैं, और उनके कल्याण के लिए काम करते हैं.
- कृष्ण अपने अनुयायियों को मित्र, शत्रु, ईर्ष्यालु, पवित्र, और पापियों को अपने मन में एक जैसा सम्मान देने की आज्ञा देते हैं.
- कृष्ण सभी आत्माओं के शुभचिंतक हैं.
- कृष्ण किसी से ईर्ष्या नहीं करते हैं, न ही वह किसी के लिए पक्षपाती हैं. वह सभी के लिए बराबर है.
- कृष्ण सभी के सबसे प्रिय मित्र हैं.

(संदर्भ: भगवद-गीता ५.२५, ५.२९, ९.१८, ९.२९, १२.१३, १५.७)





अतुलनीय शक्ति, उद्धारकर्ता, और सबसे दयालु

कृष्ण एक सामान्य इंसान की तरह एक राजकुमार के रूप में रहते थे, और कुछ ही लोग जानते थे कि वह भगवान थे. एक राजकुमार के रूप में, उनकी ८ पत्नियां थीं, जो कि प्राचीन समय में राजाओं और राजकुमारों के लिए सामान्य था. एक राक्षस ने १६,१०० लड़कियों का अपहरण कर लिया और कृष्ण उनकी मदद के लिए आए, क्योंकि वह एक रक्षक है. उन्हें लड़कियों को छोड़वाया लेकिन वे अपने घरों को वापस नहीं जा सकीं क्योंकि उनके पिता ने कुछ रातों के लिए घर से दूर रहने के कारण उन्हें अस्वीकार कर दिया. लड़कियों को समाज द्वारा गिरा हुआ माना गया. लड़कियों के पास जाने के लिए कोई घर नहीं था और उन्होंने कृष्ण को उनसे शादी करने के लिए कहा ताकि उनके पास घर हो और कोई उनकी देखभाल कर सके. कृष्ण सबसे दयालु और उद्धारक होने के नाते, खुद को १६,१०० रूपों में विस्तारित किया और उन सभी से शादी कर ली. एक पत्नी के लिए एक कृष्ण थे, और प्रत्येक पत्नी का अपना घर था. कृष्ण हमेशा एक सामान्य जोड़े की तरह अपने घर में हर पत्नी के साथ मौजूद थे.

अज्ञानी और मूर्ख कृष्ण १६१०८ पत्नियां रखने के लिए मज़ाक करते हैं. लेकिन वे यह महसूस करने में विफल रहते हैं कि यह स्वीकार करके कि उनकी १६१०८ पत्नियां हैं, वे उन्हें भगवान के रूप में स्वीकार कर रहे . यह इस बात का प्रमाण है कि यही ईश्वर है. किसी और को १६१०८ पत्निया होना और उनके महलों में हर समय हर एक के साथ रहना असंभव है.

- १६,१०८ कृष्ण थे, प्रत्येक पत्नी के लिए एक कृष्ण
- कृष्ण की पत्नी के १० बेटे और १ बेटी थी (१६१,०८० बेटे, १६,१०८ बेटियां)
- कृष्ण के पास १६,१०८ महल थे, प्रत्येक पत्नी के लिए एक.
- कृष्ण अपनी सभी १६,१०८ पत्नियों के साथ (एक ही समय में) उपस्थित थे.

उपरोक्त तथ्य बहुत स्पष्ट रूप से साबित करते हैं कि कृष्ण भगवान हैं.

सन्दर्भ: श्रीमद-भागवतम १०.५९.४२-४३ , १०.९०.२९-३१



सर्वोच्च नियंत्रक

जब शिशु कृष्ण को यमुना नदी पार करने की आवश्यकता थी, जिसमें गहरा पानी और भयंकर लहरें थीं तब नदी प्रवाह खंडित हो गया था और कई फन वाले सापों ने बारिश से आश्रय प्रदान किया था. ताकि कृष्ण को पार किया जा सके.

(श्रीमद-भागवतम १०.३.४८ -५०)



कृष्ण महा-विष्णु के रूप में विस्तार करते हैं और प्रत्येक साँस छोड़ने के साथ, उनके शरीर पर छिद्रों से लाखों ब्रह्मांड निकलते हैं। साँस के लेने साथ, वे सभी उसके शरीर में वापस चले जाते हैं। हमारे ब्रह्मांड का जीवन काल महज विष्णु की एक साँस है, ३११.०४० खरब वर्ष। (भगवद-गीता ९.७ , श्रीमद्-भागवतम् ३.११.३८)



जब यशोदा कृष्ण के मुँह में देखती है तब कृष्ण उन्हें ब्रह्मांडीय अभिव्यक्ति के सभी पहलुओं को दिखाते। बाह्य अंतरिक्ष, ग्रह, तारे, ग्रह प्रणाली, द्वीप, पर्वत, महासागर, सभी जीवों के निर्धारित समय, देह की विविधता और बहुत कुछ। (भगवद-गीता ९.१०, श्रीमद्-भागवतम् १०.८.३७-३९)

महानतम प्राप्तकर्ता



एक महिला ने फलों से कृष्ण के हाथों को भर दिया, और उनकी टोकरी तुरंत गहने और सोने से भर गई। (श्रीमद्भागवतम् १०.११.११)

सबसे शक्तिमान



कृष्णा एक पर्वत (गोवर्धन) को उठाते हैं, जिसकी परिधि २१ किमी है और इसका वजन अरबों टन है। हजारों लोगों को भारी बारिश से बचाने के लिए उन्होंने अपनी सबसे छोटी उंगली पर इसे ७ दिनों तक रखा। (श्रीमद्-भागवतम् १०.२५.१९)



उद्धारकर्ता और सबसे दयालु

इस ब्रह्मांड के भीतर, वर्तमान ब्रह्मांडीय चक्र में कृष्ण अपने मूल रूप में १८००० से अधिक बार और उनके अन्य रूपों में लाखों बार प्रकट हुए हैं। हर बार जब वह प्रकट होते हैं, तो राक्षस उन्हें चुनौती देते हैं और कृष्ण बहुत आसानी से उन्हें हरा देते हैं। कृष्ण अपने वर्तमान जीवन में अपने शुद्ध भक्तों को बचाते हैं। वह उन्हें अपने अगले अवतार तक प्रतीक्षा नहीं कराते हैं। पाँच पांडव भाई, प्रह्लाद, ध्रुव, द्रौपदी और लाखों अन्य सभी कृष्ण द्वारा अपने वर्तमान जीवन में बचाए गए थे। कृष्ण द्वारा नष्ट किए गए सभी राक्षसी नरक में नहीं भेजे जाते हैं। वे सभी मुक्ति प्राप्त करते हैं और आध्यात्मिक अभिव्यक्ति में वापस जाते हैं और पूर्ण आनंद में अनंत काल तक जीवित रहते हैं। यह ऐसा दयालु भगवान (कृष्ण) है। (श्रीमद-भागवतम स्कंध १० में कृष्ण के चमत्कार और पारलौकिक लीलाएं हैं)



सर्वोच्च नियंत्रक और सबसे दयालु

कृष्ण पर कई सर वाले सांप ने हमला किया था और वह शांति से उसके साथ खेलते रहे और फिर उसे जाने दिया। वह निर्दोषों को चोट नहीं पहुंचाते हैं। (श्रीमद-भागवतम स्कंध १०, अध्याय १६)

अ. जो भी कृष्ण की उपस्थिति में मारा जाता है, वह तुरंत आध्यात्मिक जगत में लौट जाता है।

आ. जो भी कृष्ण द्वारा मारा जाता है वह तुरंत आध्यात्मिक अभिव्यक्ति में वापस चला जाता है।

इ. जो कोई भी कृष्ण का भक्त होगा वह तुरंत मृत्यु पर आध्यात्मिक अभिव्यक्ति के लिए वापस जाएगा।

ई. जो कोई भी उपरोक्त तीन में से एक में नहीं आता है, उसे उपरोक्त में से किसी एक को प्राप्त करने के लिए असीमित मौके (पुनर्जन्म) मिलेंगे।

(श्रीमद-भागवतम १.९.३९, भ.गी ८. ५, ९.३४, २.१२-१३)

प्रमाणित उद्धारकर्ता

कृष्ण लोगों को बचाने के लिए एक जंगल की आग को निगलते हैं। (श्रीमद-भागवतम स्कंध १०, अध्याय १९)

क्यों हर आत्मा भगवान कृष्ण के लिए महत्वपूर्ण है ?

हर आत्मा उसी की है।

(भगवद-गीता ४.३५, १५.७)





कल्पनातीत समृद्धि और शक्ति

कृष्ण ने अर्जुन को अपना लौकिक रूप दिखाया। यदि आकाश में एक बार में सैकड़ों हजारों सूरज उगते , तो उनकी चमक उस सार्वभौमिक रूप में सर्वोच्च व्यक्ति से मिलती-जुलती हो सकती है। अर्जुन रथ पर विराजमान रहते हुए कृष्ण और ब्रह्मांड के असीमित विस्तार को देख सकते थे।

(भगवद-गीता अध्याय ११)



सिद्ध उद्धारकर्ता

जब दुशासन द्वारा द्रौपदी को कई लोगों के सामने अपमानित किया गया था तब कृष्ण उसे बचाने आए। वे उपस्थित थे लेकिन किसी के द्वारा देखे बिना उन्होंने द्रौपदी को असीमित कपड़े की आपूर्ति प्रदान की, ताकि वह खुदको ढक कर सके। दुशासन ने द्रौपदी की साड़ी खींची और खींची, लेकिन वह उसे निर्वस्त्र नहीं कर पाया। उसकी साड़ी का कोई अंत नहीं था। (महाभारत)



सबसे क्षमाशील और दयालु

किसी भी जाति, धर्म, रंग, लिंग, व्यवसाय और देश के बावजूद , अतीत के पापपूर्ण कर्म के बावजूद, हर कोई परमेश्वर के राज्य में वापस जा सकता है और पूरी तरह आनंद में रह सकता है। यदि इस क्षण से, कोई व्यक्ति नीचे सूचीबद्ध सभी पापपूर्ण गतिविधियों को रोकता है, इच्छाओं को नियंत्रित करता है, और कृष्ण की पूजा करता है जो दया, करुणा, प्रेम और क्षमा का प्रमाणित और दर्शनीय भगवान है।

- कोई हत्या (जानवर, इंसान, पेड़) नहीं करना।
- शराब, ड्रग्स और तंबाकू नहीं खाना।
- कोई जुआ नहीं खेलना।
- शादी से बाहर कोई रिश्ता नहीं रखना।
- किसी भी जीवित प्राणी के प्रति कोई घृणा नहीं करना।
- झूठ नहीं बोलना।
- किसी भी जीवित प्राणी के प्रति कोई हिंसा नहीं करना।
- किसीको नहीं कोसना।
- चोरी नहीं करना।

(भगवद-गीता का सार)

ईश्वर का कोई साथी नहीं है?

भगवान अकेले क्यों हों? जब तक वह दूसरों के साथ अपनी शक्ति प्रदर्शित नहीं करते, तब तक उनकी शक्ति और अपारदर्शिता का कोई अर्थ नहीं है.

कुछ लोगों का मानना है कि भगवान का कोई साथी नहीं है. जिसका मतलब यह भी है कि सहचर वाला कोई भी भगवान नहीं है. इस धारणा का सार सीमित मानवीय धारणा और बुद्धिमत्ता के आधार पर ईश्वर को अस्वीकार करने जैसा है. ऐसा विश्वास अनिवार्य रूप से नास्तिकता है. जो लोग कहते हैं कि ईश्वर का कोई साथी नहीं है, उन्हें पहले खुद से पूछना चाहिए कि उनके पास साथी क्यों हैं? वे अपने जीवन भर अकेले क्यों नहीं रहते? कोई जीवनसाथी नहीं, कोई दोस्त नहीं, कोई बच्चा नहीं, कोई रिश्तेदार नहीं, कोई सहकर्मी नहीं आदि। अगर वे खरबों वर्षों तक अकेले रहते तो उन्हें कैसा लगता?

भगवान के पास असीमित साथी हैं

हर किसी का एक जीवन साथी होता है. ज्यादातर इंसानों की शादी इसलिए होती है क्योंकि जिंदगी अकेले बोरिंग है. अकेले जीने में मजा क्या है? जीवन का उद्देश्य आनंद लेना है. लेकिन आनंद तभी संभव है जब हम दूसरों के साथ बाँटते हैं. यदि कोई व्यक्ति अकेले १०-बेडरूम वाले घर में रहता है, तो कोई आनंद नहीं होगा. अगर किसी और के साथ रहे या अगर दूसरे घर में आये तोहि १०-बेडरूम वाले घर में रहने का मजा है. अन्यथा एकेला रहना पूरी तरह से व्यर्थ है चाहे कुछ दिनों के लिए ही क्यों न हो.

ज्यादातर मनुष्य १०० वर्ष या उससे कम आयु के इस जीवन में अकेले नहीं रह सकते, जो पूरी तरह से प्राकृतिक है. क्या कोई १०० साल अकेले रह सकता है या १००० साल या लगभग १००,००० साल? कोई भी मनुष्य नहीं है जो १०० से अधिक वर्षों तक अकेले रहने के लिए सहमत होगा. ज्यादातर मनुष्य कुछ महीनों के लिए भी अकेले नहीं रहना चाहते.

सर्वशक्तिमान ईश्वर अरबों वर्षों से विद्यमान है, वह शाश्वत है. क्यों वह पृथ्वी पर लाखों विशाल असीमित ब्रह्मांड में खुद से रहे? वह पूरे दिन खुद अकेले क्या करेंगे? खरबों और खरबों वर्षों तक अकेले रहने में उन्हें क्या आनंद मिलेगा? यदि वे अपनी असीमित शक्ति का उपयोग नहीं करते तो उसका मूल्य क्या है?

इस पृथ्वी पर कभी कोई राजा या राष्ट्रपति नहीं रहा जो अकेले रहता हो या था, क्योंकि नागरिकों के बिना राजा या राष्ट्रपति बनने में बिल्कुल कोई मतलब नहीं है. एक राजा का अर्थ है कि उसके पास नागरिक हैं. उसके पास नौकरों, दोस्तों, और व्यक्तिगत संघों के साथ जीवन का आनंद लेने के लिए साथी हैं. इसी तरह, भगवान् जो सर्वोच्च व्यक्तित्व है, उनके साथी असीमित हैं. उनके पास अरबों व्यक्तिगत सेवक, मित्र और व्यक्तिगत संघ हैं. अपने शाश्वत जीवन का आनंद लेने के लिए और उसे बाँटने के लिए.

भगवान कृष्ण देवत्व के सर्वोच्च व्यक्तित्व हैं, और वह कभी अकेले नहीं होते हैं. वह अरबों दोस्तों, नौकरों और उनकी शाश्वत सहचर राधा के साथ गोलोक वृंदावन के आध्यात्मिक ग्रह पर रहते हैं. भगवान के पास अनुभव करने और दूसरों को प्यार और खुशी देने के लिए साथी हैं.

- प्यार केवल लोगों के बीच अनुभव किया जा सकता है और अकेले नहीं.
- खुशी दूसरों के साथ बाँटने से आती है न कि सिर्फ अकेले में.
- संतुष्टि दूसरों को खुश करने से होती है न कि खुद को खुश करने से.
- आनंद का अनुभव केवल दूसरों के साथ होने से हो सकता है और स्वयं से नहीं.

यदि एक शाश्वत जीव का कोई साथीदार नहीं है तो वह प्रेम से रहित है, आनंद से रहित है, संतोष से रहित है और खुशी से रहित है। इसका मतलब एक पागल जीव है.

भगवान कृष्ण सबसे अधिक दयालु और प्रेम करने वाले हैं. वह अपने अनन्त जीवन को बाकि सारे जीवों के साथ बाँटते हैं, जो जीवित संस्थाओं की इच्छाओं और योग्यताओं पर आधारित हैं. प्रत्येक जीव तत्त्व का भगवान कृष्ण के साथ एक व्यक्तिगत संबंध है, और इसका एहसास तब होता है जब जीव तत्त्व भगवान कृष्ण की एक शुद्ध भक्त बन जाता है. अंततः सभी जीवित संस्थाएँ भगवान कृष्ण या उनके विस्तार के साथ एक व्यक्तिगत साथी के रस का आनंद लेने के लिए आध्यात्मिक निवास पर वापस चली जाती हैं.

आपके पास अपने भगवान का क्या सबूत है?

भगवान का वर्णन एक धर्म के ग्रंथों में किया गया है. उन्हें एक धर्म के अनुयायियों द्वारा देखा गया है.

सनातन-धर्म.

यह इसलिए है, क्योंकि भगवान एक है

